सीखने के मानक

विषय : तृतीय भाषा हिन्दी

क्षेत्र - सुनना

आठवीं कक्षा

सामर्थ्य : कविताओं, नाटकों तथा चर्चाओं को सुनने के साथ समझना ।

- कविताओं को सुनना ।
- नाटक की कथावस्तु पहचानना और सुनना ।
- नाटक के पात्रों के नाम - सुनना ।
- नाटक के ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक आदि प्रकारों को पहचानना और सुनना ।
- नाटक के संवाद सुनना ।
- पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को सुनना ।
- नये शब्दों के अर्थ, पर्यायवाची, विलोमार्थी आदि सुनना।

8.1.2. अपरिचित घटनाओं के संवादों, चर्चाओं को सुनना ।

- अपरिचित घटनाओं को सुनना ।
- अपरिचित संवादों को सुनना ।
- अपरिचित कहानी सुनना और उसका भाव समझना ।
- दैनिक जीवन में होनेवाली बातचीत तथा चर्चाओं में भाग लेकर सुनना ।

नौवीं कक्षा

सामर्थ्य : कविता, नाटक, विचारगोष्टियों में अर्थ-ग्रहण करना -

- वाक्यों के पद, पदबंध, वाक्यांशों को जानना ।
- उतार चढ़ाव के नमूने सुनना ।
- कविता की शैली और नाटक की भाषा का अंतर सुनना ।
- कविता के प्रकृति सौंदर्य और नाटक के पात्रों के संवाद सुनने में शब्दों का अंतर समझना ।

अपरिचित प्रसंगों को सुनना, अर्थ-ग्रहण करना ।

- अनदेखे अथवा अपरिचित प्रसंगों को (आग की दुर्घटना, बाढ़) आदि सुनना ।
- कविता में प्रकृति वर्णन सुनना ।
- विषयवस्तु के अनुसर भाषा और भाव सुनना ।
- सुनते समय भाषा की स्पष्टता, व्याकरण नियमों को सुनना।
- नाटक अथवा कहानी में ऐतिहासिक, पौराणिक घटनाओं के शब्द - चित्र सुनना ।
- पर्यावरण, वन्यजाति संरक्षण से संबंधित घटनाएँ सुनना ।
- अपरिचित घटनाओं को सुनते समय भाषा की चित्रमयता

दसवीं कक्षा

सामर्थ्य : कविता, नाटक, विचारगोष्टियों में अर्थग्रहण करना।

- नाटक के वार्तालापों का महत्व समझना ।
- विचार गोष्टियों में विचार प्रस्तुति को सुनना ।
- संवाद, नाटक, कविताओं को सुनते समय, भावग्रहण करना।
- विचार प्रकट करने में वर्तमान परिस्थिति के उदाहरणों पर ध्यान देना ।
- वैज्ञानिक, साहित्यिक, सामाजिक विषयों का विश्लेषणों के आधार सुनना ।
- वैश्विक विचारों पर, वार्तालाप और उसके विश्लेषण सुनना।

अपरिचित प्रसंगों को सुनना, अर्थग्रहण करना ।

- अपरिचित घटनाओं के बारे में नक्शों, रेखाचित्रों, शब्दचित्रों रेडियो द्वारा सुनना, जानना ।
- शुद्ध भाषा का स्पष्ट उच्चारण सुनना ।
- सांस्कृतिक समारोह, व्यावहारिक विषयों पर ध्यान देना।
- स्वदेश, विदेशों की दर्शनीय जगहों का वर्णन सुनना ।
- नाटक के संवादों का विशिष्ट प्रभाव जानना ।

आठवीं कक्षा

- दृश्य, श्रव्य माध्यमों द्वारा चित्र कथाओं द्वारा शिक्षकों के द्वारा पढ़ाई गई कविता, कहानी, आदि सुनना ।
- वाद - विवाद में पक्ष एवं विपक्ष के विचारों को सुनना ।

8.1.3. सामूहिक कार्यक्रमों के निर्देशों को सुनकर कार्यरूप में लाना ।

- सामूहिक क्रियाकलाप में भाग लेना तथा उनके निर्देशों को सुनना ।
- प्रार्थना-सभा, खेल - खूद आदि में भाग लेना तथा आदेशों तथा निर्देशों को सुनना ।
- सामूहिक रूप में गाना सुनना तथा उसका अनुकरण करना।
- निर्देशानुसार कार्यक्रमों को सुनना । उदा : पर्यटन संबंन्धी, स्काउट आदि ।

8.1.4. विषय सुनने के बाद प्रतिक्रिया - सामर्थ्य पाना । क्यों? कैसे ? ऐसा हो तो? ऐसा न हो तो? आदि।

- वाक्य रचना, शब्द परिचय, आदि सुनना।
- प्रसिद्ध व्यक्तियों, कलाकारों और साहित्यकारों के बारे में सुनना ।
- राष्ट्रीय - नेताओं के भाषण सुनना ।
- प्रादेशिक नेताओं के भाषण और आदर्श उनके जीवन के बारे में सुनना ।
- प्रसिद्ध - साहित्यकारों की रचनाओं को सुनना ।

नौवीं कक्षा

पर ध्यान देना ।

सामूहिक कार्यक्रमों को समझकर आंगिक अभिनय करना ।

- पाठ्यपुस्तक से संबंधित और पाठ्येतर सामाजिक क्षेत्र में बातचीत सुनना ।
- प्रश्नोत्तर, चर्चाओं में पर - विरोधी बातों को सुनना ।
- शाला के वार्षिकोत्सव पर सम्मानित अतिथियों का भाषण, आंगिक अभिनय देखना, सुनना ।
- राष्ट्रनिर्माण, समाज सुधार में भाग लेने से राष्ट्रप्रेम बढ़ता है ।
- शहर में घूमते समय, सूचना-फलक, नाम-फलक आदि सूचनाओं को समझना ।

विषय को सुनने के बाद कैसे, वैसे न होने से, ऐसे होने से इस प्रश्नों के कारणों का उत्तर देना ।

- सृजनात्मकता के महत्व को सुनना, उसके विकास के लिए वार्ताएँ, भाषण सुनना ।
- अधिक वर्षा होने से या न होने से परिणाम क्या होगा ?
- रेल, बस आदि हड़ताल के कारण बंद होने से, बिजली के बंद होने से - इनका तार्किक विचार करना ।
- पर्यावरण में हरित क्रांति होने से - या न होने से, परिणाम लिखना ।
- देश में केवल उद्योगों के बढ़ने के क्या परिणाम होंगे?

दसवीं कक्षा

सामूहिक कार्यक्रमों को समझकर अर्थ ग्रहण करना ।

- विचार विमर्श करने से विचारशीलता बढ़ सकती है ।
- विद्यार्थियों में सक्रियता बढ़ाने के लिए सामाजिक विषयों पर चर्चागोष्ठियों का आयोजन होना चाहिए ।
- विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से अधिक जानकारी मिल सकती है ।
- सामूहिक कार्यक्रम जैसे, पर्यावरण संबंधी जानकारी एन.सी.सी के कार्यक्रमों में भाग लेकर विचार संग्रह करना।
- सहयोग और उत्तरदायित्व बढ़ता है ।
- स्पर्धात्मक मनोभाव की वृद्धि होती है ।

विषयों को सुनने के बाद कैसे, ऐसे न होने से, ऐसे होने से, इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर देना ।

- कर्नाटक में कन्नड भाषा पूरी तरह हर क्षेत्र में रहेगी तो?
- लड़कों और लड़कियों के पहनावे एक ही प्रकार के हो तो?
- विश्वमहायुद्ध के शुरु होने से क्या होगा?

सीखने के मानक

विषय : तृतीय भाषा हिन्दी

क्षेत्र - बोलना

आठवीं कक्षा

विषय के सम्बन्ध में सहज बातचीत ।

- कक्षा में आपस में सहज रूप में बातचीत करना ।
- सुने हुए विषय के बारे में सहज रूप में बोलना ।
- दैनिक जीवन से सम्बन्धित सहज बातचीत करना ।
- ध्वनि का आरोह - अवरोह के साथ बोलना ।
- नाटक के संवाद बोलना ।
- समकालीन विषयों पर वाद - विवाद करना ।
- शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ बोलना ।

सरल तथा परिचित विषयों के बारे में बोलना ।

- सरल भाषा में बोलना ।
- परिचित विषयों को संदर्भानुसार बोलना ।
- छोटों का बड़ों के साथ व्यवहार करनेवाले शब्द प्रयोग करके बोलना ।
- सुने हुए विषयों के बारे में बोलना ।

घटनाओं एवं प्रसंगों को बताना ।

- एक निर्दिष्ट घटना के बारे में बोलना ।
- प्रसंग के अनुकूल बोलना ।
- किसी एक महत्वपूर्ण घटना को सुनकर बोलना ।

नौवीं कक्षा

विषय के अनुसार चर्चाएँ, संवाद और विवरणों के साथ बोलना।

- बोलने में प्रवाह होना चाहिए ।
- बोलते समय विराम चिन्हों पर ध्यान रखना चाहिए ।
- दृष्टांत सहित सुनाने से विद्यार्थी निपुणता पाता है ।
- शुद्धभाषा और स्पष्टता से बिना संकोच बोलना चाहिए ।
- चर्चागोष्ठियों में तर्कबद्धता से अपने विचार बोलना ।

विषय के अनुसार चर्चाओं, संवादों में विवरणों के साथ बोलना।

- बोलने में प्रवाह होना चाहिए ।
- बोलते समय विराम चिन्ह पर ध्यान देना ।
- शुद्ध और स्पष्ट रूप से, बिना संकोच बोलना चाहिए ।
- चर्चागोष्ठियों में तर्कबद्धता से अपने विचार बोलना ।
- चर्चागोष्ठियों में उचित उतर - चढ़ाव के साथ भावप्रदर्शन करना चाहिए ।
- पाठ्य पुस्तक और पाठ्येतर विषयों को स्पष्ट रूप से सरल शब्दों में बोलने का सामर्थ्य बढ़ाना चाहिए ।

प्रसंगों और घटनाओं के बारे में स्पष्टता और धाराप्रवाह के साथ बोलना ।

- बोलते समय धारा प्रवाह बनाये रखना ।

दसवीं कक्षा

विषय के अनुसार चर्चाओं संवादों में विवरण के साथ बोलना।

- बोलने की भाषा की गति में प्रवाह होना चाहिए ।
- प्रस्तावना के साथ शुरु करने से प्रभाव अधिक होता है ।
- चर्चागोष्ठियों में बोलते समय विषय के अनुकूल ध्वनि का उतार चढ़ाव होना चाहिए ।
- उच्चारण की स्पष्टता, अभिप्राय के मंडन में उदाहरणों का उपयोग होना चाहिए ।
- विषयों के प्रतिपादन में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग होना चाहिए ।
- संवादों में बोलते समय आंगिक अभिनय से बोलना आकर्षक होगा ।
- नाटक के संवाद में ऐतिहासिक प्रसंग में ओजपूर्ण भाषा से अधिक प्रभाव हो सकता है ।

प्रसंग और घटनाओं के बारे में स्पष्टता और धाराप्रवाह के साथ बोलना ।

- बोलते समय सौंदर्य के साथ प्रसंग के अनुसार शब्द चयन करना चाहिए ।
- विचारों को बताने के लिए प्रभावकारी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ।
- ग्रंथालय में काव्य, नाटक, निबंधो की उत्तम कृतियों को पढ़ना।

आठवीं कक्षा

- विषय के अनुकूल उचित - आरोह - अवरोह सहित बोलना ।
- घटनाओं को समझकर अपने वाक्यों में बोलना ।
- मेलों या त्योहारों आदि के बारे में बोलना ।

नाटक एवं चर्चाओं में भाग लेकर बात करना ।

- नाटक की कथावस्तु सुनकर बोलना ।
- नाटक के पात्रों के बारे में अपना अभिप्राय प्रकट करना ।
- नाटक के संवाद बोलना ।
- नाटक में आये हुए प्रमुख विषयों को बोलना ।
- नाटक में आये हुए पर्यायवाची, विलोमार्थी आदि शब्दों को बोलना ।
- चर्चाओं में भाग लेकर सुनना तथा बोलना ।

नौवीं कक्षा

- बोलते समय विरामचिह्नों का पूरा ध्यान रखें ।
- घटनाओं के बारे में बोलते समय स्वाभाविकता की जरूरत है।
- बातों आंगिक अभिनय विशेष महत्व रखता है ।
- बोलते समय प्रसंग के अनुसार सामाजिक शिष्टता प्रकट करनी चाहिए ।

समारोह के कार्यक्रमों में निरूपण करना ।

- अभिनय से निरूपण को सजीव बनाना ।
- वातावरण में उत्साह और संतोष भरना ।
- कार्यक्रम की एकतानता दूर करने के लिए बीच-बीच में विनोदात्मक प्रसंग करना ।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कलाकारों का लघु परिचय दे सकना ।
- बीच-बीच में कविता की पंक्तियां सुना कर कार्यक्रम को रोचक बनाना ।

मुहावरेदार भाषा में बोलना ।

- मुहावरों का उपयोग समझना ।
- भाषा को सशक्त बनाने के लिए मुहावरों का होना जरूरी है ।
- मार्मिक प्रसंगों का वर्णन करते समय प्रभाव पैदा करने के लिए मुहावरों और कहावतों का प्रयोग ।

दसवीं कक्षा

- दुर्घटना, ड़कैती - चोरी के प्रसंगों में आतंक, कुतूहल जगाना।
- कहानी कहने में स्वाभाविकता होनी चाहिए।
- समाजसुधार, पर्यावरण स्वास्थ्य -रक्षा आदि के मौकों पर सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए ।
- प्रदूषण रोकने का विधान समझना ।
- यात्रा का निरूपण, प्राकृतिक दृश्यों के चेतोहारी वर्णन में सरल भाषा का प्रयोग ।

समारंभ के कार्यक्रमों में निरूपण करना ।

- नाटक का कार्यक्रम हो तो नाटककार का नाटक की कथावस्तु का परिचय, तीन चार वाक्यों में बोलना ।
- गीत गायन हो तो कवि परिचय और गानेवाले का नाम, कविता का आशय बताना।
- कार्यक्रमों के वातावरण में आह्लाद पैदा करना।
- अध्यक्ष का सम्मानित शब्दों में परिचय कराना ।
- कार्यक्रम के आदि से अंत तक सरल सुंदर वातावरण का निर्माण करना ।
- शाला समारंभ में दर्शकों के सामने विषय प्रस्तुतीकरण जानना।
- समारंभ के मुख्य अतिथि, मुख्य भाषणकार का परिचय पहले से ही जानना चाहिए ।
- कार्यक्रम, नाटक, गीत गायन, प्रहसन, अनुकरण जो भी हो उसके अनुसार कलाकारों का लघुपरिचय जानना ।

सीखने के मानक

विषय : तृतीय भाषा हिन्दी

क्षेत्र - पढ़ना

आठवीं कक्षा

विशिष्ट वर्णो के ध्वनि-अंतर को पढ़ना और समझना ।

- ✻ वर्णमाला के विन्यास को ध्यान पूर्वक देखकर पढ़ना ।
- ✻ वर्णमाला के ह्रस्व, दीर्घ, अल्पप्राण, महाप्राण आदि वर्णो को ध्यानपूर्वक देखना और पढ़ना ।
- ✻ संयुक्ताक्षर को ध्यानपूर्वक देखकर पढ़ना ।
- ✻ हर वर्ण की विशिष्ट ध्वनि को अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ना ।
- ✻ पाठ में आये हुए मुख्यांश पढ़ना तथा समझना ।

छपे हुए और लिखित अक्षरों को धाराप्रवाह पढ़ना ।

- ✻ छपे हुए अक्षरों एवं विषयों को शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करते हुए पढ़ना ।
- ✻ वाक्यों में यथोचित बलाघात करते हुए पढ़ना ।
- ✻ विरामादि चिन्हों का समुचित ध्यान रखते हुए पढ़ना ।
- ✻ उचित बल और आरोह - अवरोह के साथ पढ़ना ।
- ✻ हस्तप्रति को ध्यान पूर्वक देखकर पढ़ना ।
- ✻ दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रिकाओं को पढ़ना ।
- ✻ कविताओं को पढ़ना ।
- ✻ राग, लय, ताल आदि को ध्यान में रखकर सस्वर वाचन करना ।

नौवीं कक्षा

विविध पदों के उच्चारण में ध्वनि साम्य और ध्वनि के अंतर का अर्थ ग्रहण करना ।

- ✻ एकसमान उच्चरित होनेवाले शब्दों को एक साथ सीखना । जैसे : श्रम, क्रम, चर्म, कर्म, आदि ।
- ✻ ध्वनि-साम्य-विधि में एक या दो स्वरों से युक्त एक या दो समान व्यंजनवाले शब्दों को सीखना । जैसे : कल-बल, भार-सार, मर्म-धर्म.
- ✻ ध्वनि-साम्य शब्दों की सूची बनाना ।

पढ़े हुए विषयों के बारे में सोचकर तार्किकता से निर्णय पर पहुँचना ।

- ✻ पढ़े हुए विषयों के बारे में तार्किकता से सोचना ।
- ✻ नाटक या कहानी के पात्रों की प्रशंसा करना ।
- ✻ पढ़े हुए विषयों के सम्बन्ध में अन्य विषयों को संग्रहीत करना ।

मुद्रित पठ्येतर विषय और हस्तलिखित विषयों को पढ़ना ।

- ✻ मुद्रित और लिखित विषयों को स्पष्टता से पढ़ना ।
- ✻ अक्षर विन्यास पर ध्यान देकर पढ़ना ।
- ✻ शब्दक्रम पर ध्यान देकर पढ़ना ।

दसवीं कक्षा

सामर्थ्य :विविध पदों के उच्चारण में ध्वनि-साम्य और ध्वनियों के अंतर को पहचानना ।

- ✻ समान लगनेवाले शब्दों के अनेक रूप समझ सकना ।
- ✻ अनेक शब्दों के उच्चारण समान रहने पर भी उनके अर्थ भिन्न होते हैं - इन्हें पहचानकर पढ़ना ।
  जैसे अनुकरण - अनुसरण
  अनल - अनिल

पढ़े हुए विषयों के बारे में सोचकर तार्किक निर्णय लेना ।

- ✻ पढ़े हुए विषयों की प्रामाणिकता पर निर्णय लेना ।
- ✻ किसी कहानी या नाटक के पात्रों की प्रशंसा करके उन पात्रों के बारे में निर्णय लेना ।
- ✻ पढ़े हुए विषयों के सम्बन्ध में अन्य विषय संग्रहीत करके, पूर्व के विचारों के बारे में निर्णय लेना ।
- ✻ नए विषय पढ़कर तार्किक चिंतन करना और उसके सम्बन्ध में निर्णय लेना ।

मुद्रित पाठ्येतर विषय और हस्तलिपि को पढ़कर अर्थग्रहण करना ।

- ✻ स्पष्टता से पढ़ने के साथ विषय से सम्बंधित जानकारी पाना ।

आठवीं कक्षा

समाचार पत्रों और अन्य मुद्रित विषयों को पढ़ना ।

- स्थानीय, देशीय पत्रिकाओं को पढ़ना ।
- दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रिकाओं को पढ़ना ।
- समाचार पत्र में आये हुए विभिन्न प्रकार के मुख्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ना ।
- प्रसिद्ध रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ना ।
- श्यामपट पर लिखे हुए विषय को पढ़ना ।
- चर्चा में लिखित सामग्री पढ़ना ।

नौवीं कक्षा

लेखन चिन्हों पर ध्यान देना ।

- पढ़ते समय लेखन-चिन्हों पर ध्यान देखकर पढ़ना ।
- पूर्णविराम, अल्प विराम, उद्धरण चिह्न-आदि विराम चिह्नों पर ध्यान देकर पढ़ना ।

दसवीं कक्षा

- ध्वनि स्पष्टता के साथ उच्चारणगत भेद, अर्थ-भेद पर ध्यान देकर पढ़ना ।
- विभिन्न प्रकार के मुद्रण और विभिन्न व्यक्तियों के लेखन के विन्यास की ओर ध्यान देना ।
- वाक्यक्रम और वाक्य में निहित अर्थ की ओर ध्यान देना।

लेखन चिह्नों पर ध्यान देना ।

- पढ़ते समय लेखन-चिह्नों पर ध्यान देना ।
- सभी लेखन-चिह्नों पर ध्यान देकर पढ़ना ।
- पाठ्य पुस्तक में जिन लेखन-चिन्हों का प्रयोग हुआ है उन्हे पहचानना ।
- पाठ्य - पुस्तक के अलावा अन्य पुस्तक पढ़ते समय लेखन-चिह्नों के प्रयोग को पहचानना ।

सीखने के मानक

विषय : तृतीय भाषा हिन्दी

क्षेत्र - लिखना

आठवीं कक्षा

सही नमूना तथा अंतर के साथ लिखना ।

- मानक वर्णों द्वारा लिखना ।
- नमूना का पालन करते हुए लिखना ।
- सुन्दर अक्षरों में लिखना ।
- वर्णो के अंतर को ध्यान में रखकर लिखना ।

लेखन - चिह्नों द्वारा उक्त लेखन लेना ।

- लेखन-चिह्नों का प्रयोग करते हुए लिखना ।
- तीव्र गति से सुपाठ्य लिखना ।
- श्यामपट पर सुन्दर रूप से लिखना ।
- सभी शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखना ।
- सभी प्रकार के विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना ।
- व्याकरण सम्मत भाषा लिखना ।
- संदर्भ के अनुकूल उपयुक्त शब्दों, कहावतों एवं मुहावरों से युक्त भाषा लिखना ।

सरल अनौपचारिक पत्रों तथा संवादों को लिखना ।

- सभी प्रकार के पत्र लिखना ।
- छुट्टी पत्र, व्यावहारिक पत्र, व्यक्तिगत पत्र आदि लिखना।
- अपठित गद्यांश और पद्यांश का सारांश लिखना ।

नौवीं कक्षा

सामर्थ्य - समानार्थक और भिन्नार्थक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग ।

- पाठ में आये शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करना ।
- नये शब्दों के विविध अर्थ लिखना ।
- नये शब्दों के अर्थ समझकर अपने वाक्यों में लिखना ।
- भिन्नार्थक शब्दों की सूची तैयार करना ।
- पर्यायवाची शब्दों की वाक्यों में प्रयोग करना ।

कथाओं को नाटक के रूप में नाटक को कथा के रूप में रूपांतरित करना ।

- नाटक को कहानी में परिवर्तन करते समय विद्यार्थी को दृश्यों को घटना में परिवर्तन करना ।
- कहानी की भाषा में गति अभिरुचि में सहजता आनी चाहिए ।
- नाटक, कहानी, कविता, आदि का सारांश अपने शब्दों में लिखना ।
- घटनाओं को क्रम में लिखना ।
- नाटक को कहानी के रूप में लिखना ।

दसवीं कक्षा

सामर्थ्य : समानार्थक, भिन्नार्थक, विलोमार्थक तथा शब्द - युग्मों का वाक्यों में प्रयोग ।

- गद्य, नाटक, संवाद में समानार्थक, भिन्नार्थक, विलोमार्थक तथा शब्द - युग्मों का वाक्यों में सही प्रयोग करना ।
- गद्य - पद्य, नाटक में नये शब्दों का अर्थ - सहित सही प्रयोग करना ।
- समानार्थक, विलोमार्थक शब्दों की सूची तैयार करना ।
- पर्यायवाची तथा विलोमार्थक शब्दों का वाक्यों में अर्थानुसार प्रयोग करना ।
- नये शब्दों में निहित अर्थ समझना तथा वाक्यों में भिन्नार्थक शब्दों का सही प्रयोग करना ।

कथा को नाटक और नाटक को कथा के रूप में परिवर्तन करना तथा पढ़ने की आदत बढ़ाना ।

- नाटक में आनेवाले पात्रों को पहचानकर लिखना ।
- नाटक के पात्रों का सरल वाक्यों में विवरण लिखना ।
- नाटक के पात्रों के अनुसार सरल भाषा में संभाषण लिखना।
- कहानी को पढ़कर नाटक के रूप में सरल वाक्यों में लिखना ।
- नाटक, कहानी में चित्रित प्रधान प्रसंगों का सरल गद्य रूप में लिखना ।

आठवीं कक्षा

- समाचार-पत्रों से समाचारों की संक्षिप्त रूप रेखा तैयार करना ।
- विद्यालय की पत्रिका के लिए लेख लिखना ।

नौवीं कक्षा

निबंध, पत्र, आदि में लेखन-चिह्नों पर ध्यान देकर लिखना ।

- लिखते समय लेखन-चिह्नों का सही प्रयोग करना ।
- देखे, सुने और पढ़े अंशों के आधार पर टिप्पणी लिखना ।
- पत्र लेखन के विविध प्रकारों में लेखन चिह्नों का सही प्रयोग करना ।
- विविध प्रकार के निबंधो को पढ़कर संक्षिप्त करना ।

सरल, क्रियात्मक व्याकरण के अंशों का लेखन में प्रयोग करना।

- वाक्यों के अंतर्गत आनेवाले क्रिया शब्दों को चुनकर लिखना।
- सर्वनाम पदों का वाक्यों में प्रयोग करना ।
- वार्तालाप द्वारा सुने गये अंशों को समझकर लिखना ।
- वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों को पहचानकर लिखना ।
- वाक्यों में क्रिया विशेषण का प्रयोग करना ।

दसवीं कक्षा

निबंध, पत्रलेखन, नाटक, संवाद तथा गद्य लेखन में लेखन चिह्नों का सही प्रयोग करना ।

- साहित्य की विधाओं में नाटक को पहचानकर उसके वार्तालाप को सही लेखन-चिह्नों का प्रयोग करके लिखना।
- संवाद - नाटक, निबंध तथा गद्य लेख में प्रयुक्त लेखन चिह्नों का नाम लिखना ।
- सुने, पढ़े हुए नाटक, वार्तालाप के मुख्य अंशों को लेखन चिह्नों का प्रयोग करके अपने वाक्यों में लिखना ।
- विभिन्न प्रकार के नाटक, निबंध पढ़कर सरल वाक्यों में संक्षिप्त रूप से लिखना ।

सरल क्रियात्मक व्याकरण का प्रयोग करना ।

- वाक्यों में प्रयुक्त, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विभक्ति - कारक चिन्हों को पहचानना और लिखना ।
- सर्वनाम और संज्ञा के प्रयोग संबंधी भेद समझकर सरल वाक्यों की रचना करना ।
- वार्तालाप में प्रयुक्त विस्मयादि बोधक चिह्नों को समझकर वाक्यों में प्रयोग करना ।
- वाक्यों में प्रयुक्त कारक चिह्न, अव्यय, विशेषण, क्रिया इत्यादि व्याकरण अंशों को पहचानना और वाक्यों में प्रयोग करना ।

छठीं से लेकर दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए जीवन-मूल्य

1) बड़ो के प्रति आदर और सम्मान ।

2) भाई - बहन के प्रति प्रेम और सद्भावना ।

3) अध्यापकों के प्रति गौरव ।

4) पाठशाला परिसर की स्वच्छता ।

5) सहपाठियों के साथ अच्छा व्यवहार ।

6) अपने गाँव, कस्बे, तालूका, जिला के प्रति सम्मान ।

7) अपने राज्य और देश के प्रति अत्यंत गौरव ।

8) पर्यावरण की निर्मलता का ख्याल ।

9) पशु - पक्षी, नद-नदी, वन - जंगल आदि प्राकृतिक संपत्ति के प्रति प्रेम और निष्ठा ।

10) मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा के प्रति ममता ।

11) सहनशक्ति ।

12) सच बोलना ।

13) झूठ नहीं बोलना ।

14) लगन ।

15) नियमितता । (रेगुलारिटी)

16) ईमानदारी ।

17) विनय ।

18) हिम्मत ।

19) दृढ़ निश्चय ।

20) सहानुभूति ।

21) अध्ययन में रुचि और श्रद्धा ।

22) जिज्ञासा

23) सोच-विचार करने की क्षमता ।

24) देशप्रेम ।

25) लोकमंगल की भावना ।

26) सहयोग और सहकारिता ।

27) जियो और जीने दो का संकल्प ।

28) संयम ।

29) मितव्ययिता ।

30) सहजता और स्वाभाविकता ।

31) सादगी

32) उदात्त विचारों का चिंतन - मनन ।